मनोकामना प्रदायक

श्री वैभव लक्ष्मी व्रत कथा

सुख शांति, वैभव, धन-धान्य
तथा समस्त मनोकामनाएं प्रदान
करने वाली प्राचीन व्रत कथा।

सौभाग्य दीप
प्रकाशन

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

सौभाग्य दीप की शुद्ध व प्राण प्रतिष्ठित ज्योतिष संबंधी सामग्री

कर्क राशि का लाकेट

नवरत्न ब्रेसलेट

श्वेतार्क गणपति

पारद गणेश

पारद लक्ष्मी

बीसा पन्ना लाकेट

कालसर्प योग शांति महायंत्र

पारद श्री यंत्र

बीसा गोमेद लाकेट

वास्तुदोष निवारण

श्री यंत्र आसन सहित

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

मनोकामना प्रदायक श्री वैभव लक्ष्मी व्रत कथा

धन, समृद्धि, वैभव, ऐश्वर्य, सुख, शान्ति, प्रगति देने वाला तथा सभी मनोकामनाओं की पूर्ति करने वाला अद्भुत शीघ्र फलदायक व्रत, पूजन विधि, उद्यापन विधि लक्ष्मी जी की आरती, श्री यंत्र महिमा, महालक्ष्मी अष्टकम् तथा श्री सूक्त सहित।

मूल्य– 9/– रु.

सौभाग्य दीप प्रकाशन

फ्लैट नं. 45, सैन्ट्रल मार्किट, लाजपतनगर,
नई दिल्ली–24, फोनः 29840051, 29840053, 30946010
मोबाइल : 9312413737, 9350577777, 9873209999

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

सभी सुख साधनों से परिपूर्ण सम्पन्न जीवन व्यतीत करना हर मनुष्य की कामना होती है। व्यक्ति को अपने पुरुषार्थ के बल पर जो सफलतादायक परिणाम मिलते हैं, उनमें उसके भाग्य का बहुत बड़ा हाथ होता है। जिस व्यक्ति पर मां वैभव लक्ष्मी की कृपा हो, वह बहुत धनवान, बुद्धिमान तथा भाग्यवान माना जाता है। आर्थिक समृद्धि व्यक्ति के बहुत से दुर्गुणों को ढक देती है। निर्धन व्यक्ति को दोषी न होते हुए भी एक अभिशप्त जीवन जीना पड़ता है। निर्धनता को दूर करने के लिए बुद्धि तथा परिश्रम के बल पर निरन्तर प्रयास करते रहना पड़ता है। तभी धन लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होती है। श्रद्धा, आत्म विश्वास, संयम, परोपकार तथा जनकल्याण की भावना और सात्विक जीवन सच्ची सफलता के लक्षण हैं। श्रद्धापूर्वक मां वैभव लक्ष्मी का व्रत करके पूर्ण समर्पण भाव से अपने परिश्रम के परिणाम मां वैभव लक्ष्मी पर छोड़ दें। आप स्वयं पाएंगे कि मां वैभव लक्ष्मी की कृपा से आपकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण हो रही हैं। जिन परिणामों की आप केवल कामना ही करते थे, वे साक्षात आपके सामने हैं। मां अपने भक्तों पर शीघ्र दया करती हैं और उन्हें दूसरों के सामने झुकने नहीं देती हैं। यही है मां वैभव लक्ष्मी के व्रत का फल। इस व्रत के प्रभाव से लाखों

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

व्यक्ति लाभ उठा चुके हैं। आप भी उठाएं। परन्तु एक बात अवश्य ध्यान रखें कि लाभ केवल तभी मिलता है जब व्रत में आपकी पूरी श्रद्धा हो। व्रत के उद्यापन के समय पुस्तकें वितरित करने में कंजूसी न करें। जितनी अधिक श्रद्धा भाव से आप व्रत की पुस्तकें वितरित करेंगे उतना ही स्थायी आपको लाभ मिलेगा। अपना लक्ष्य 201 अथवा 101 पुस्तकें वितरित करने का रखें। यदि यह संभव न हो तो 51, 31, 21 या 11 पुस्तकें आप वितरित कर सकते हैं। पुस्तकें किसी धार्मिक स्थान या मन्दिर के सामने शुक्रवार को वितरित करें। यदि एक दिन में सारी पुस्तकें वितरित न हो सकें तो अगले दिन वितरित करें। मां वैभव लक्ष्मी के भक्तों में वृद्धि में सहायक होने से मां आपका भी कल्याण करेंगी। पुस्तकें आप अपने स्थानीय पुस्तक विक्रेता से ले सकते हैं अथवा सौभाग्य दीप प्रकाशन से सीधे मंगा सकते हैं। घर बैठे वी. पी. पी. से पुस्तकें मंगाने के लिए आप हमारे कार्यालय के पते पर पत्र लिख दें। सौभाग्य दीप प्रकाशन की पुस्तकों में सरल भाषा में प्रमाणिक सामग्री उपलब्ध होती है। पुस्तकें वितरित करते समय 'जय मां वैभव लक्ष्मी' 'जय मां वैभव लक्ष्मी' उच्चारण करते रहें।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

श्री धन लक्ष्मी मां

हे धन लक्ष्मी मां ! मैंने पूरे विधि-विधान से श्रद्धाभाव से आपकी स्तुति की है, आप मेरे परिवार को धन-सम्पत्ति से परिपूर्ण करें।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

श्री गज लक्ष्मी मां

हे गज लक्ष्मी मां, जिस प्रकार आपने अपने सभी भक्तों पर कृपा की है, उसी प्रकार मुझ पर भी दया करें मां।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

श्री धान्य लक्ष्मी मां

हे धान्य लक्ष्मी मां, जिस प्रकार आपने अपने सभी भक्तों को धन धान्य से सम्पन्न किया है,उसी प्रकार मुझ पर भी कृपा करें मां।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

श्री अधि लक्ष्मी मां

आपने अपने सभी भक्तों पर निरंतर कृपा की है मां। मुझ पर भी उसी प्रकार कृपा करो मां।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

श्री विजया लक्ष्मी मां

आपने अपने सभी भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण की हैं। मेरी भी मनोकामना पूर्ण करो मां।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

श्री ऐश्वर्य लक्ष्मी मां

हे मां ऐश्वर्य लक्ष्मी ! आपने प्रसन्न होकर जैसे अपने अन्य भक्तों को ऐश्वर्य प्रदान किया, वैसा ही मुझे भी प्रदान करें।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

श्री वीर लक्ष्मी मां

हे वीर लक्ष्मी मां ! मुझ पर आपकी दयादृष्टि बनी रहे। आपकी कृपा बनी रही तो सभी सुख-वैभव मुझे प्राप्त हो जाएंगे।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

श्री संतान लक्ष्मी मां

हे संतान लक्ष्मी मां, आपने अपने सभी भक्तों पर कृपा की है। मुझ पर भी कृपा करो मां। मेरे परिवार का धन धान्य से कल्याण करो मां।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

व्रत कौन करे

कोई भी पुरुष या स्त्री इस व्रत को कर सकता है। यदि घर की स्त्री इस व्रत को करती है और पुरुष उसमें सहायता देता है तो व्रत के परिणाम शीघ्र दिखाई देते हैं। यदि स्त्री नहीं है अथवा वह व्रत नहीं करना चाहती तो पुरुष स्वयं कर सकता है। यदि पुरुष अविवाहित है तो उसे यह स्वयं करना चाहिए। यह व्रत शुक्रवार को किया जाता है। यदि स्त्री शुक्रवार को अपवित्र अवस्था में है तो यह व्रत उसे अगले शुक्रवार को करना चाहिए।

व्रत का उद्देश्य

किसी भी सात्विक कार्य की पूर्ति के लिए यह व्रत किया जा सकता है। धन की प्राप्ति, दरिद्रता का निवारण, अच्छे स्वास्थ्य व सुन्दरता की प्राप्ति, पारिवारिक वातावरण को शान्त व सुखमय बनाने, निरन्तर होने वाली हानियों व दुर्घटनाओं को रोकने, विवाह में विलम्ब को दूर करने, मनोवांछित कामनाओं को प्राप्त करने, सभी कार्यों में निरन्तर सफलता व समृद्धि प्राप्त करने के उद्देश्य से यह व्रत किया जा सकता है। वशीकरण अथवा उच्चाटन आदि के कार्यों के लिए यह व्रत न करें।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

व्रत में आवश्यक सामग्री

1. स्फटिक, सोने, चांदी या ताम्र पत्र पर बनाया गया एक श्री यंत्र।
2. सोने या चांदी का कोई स्वच्छ व साफ सुथरा आभूषण या सिक्का।
3. चौकी या पटरा तथा उसके लिए लाल कपड़ा।
4. धूप, दीप, रोली, लाल पुष्प।
5. आटे को घी में भूनकर बना मीठा प्रसाद, मिठाई का प्रसाद या गुड़ (यथाशक्ति)
6. केला।
7. कलश।
8. अक्षत।

सोना, चांदी, स्फटिक या ताम्र पत्र पर बना श्री यंत्र उपलब्ध न होने पर इस पुस्तक में अन्दर दिया गया श्री यंत्र प्रयोग करें। यदि नया आभूषण उपलब्ध न हो तो पुराने आभूषण को जल से अच्छी तरह धोकर प्रयोग करें। चौकी या पटरा उपलब्ध न होने पर किसी भी वस्तु के द्वारा कुछ ऊँचा आसन बना लें ताकि उस पर श्री यंत्र रखा जा सके। धूप दीप श्रद्धा तथा सामर्थ्यानुसार प्रयोग करें। अगर प्रसाद बनाना संभव न हो तो बना बनाया मीठा प्रसाद बाजार से ले लें। घर में उपलब्ध किसी भी कलश या लोटे का प्रयोग आप कर सकते हैं। अक्षत अर्थात् चावल टूटे हुए नहीं होने चाहिएं तथा उनमें कुछ रोली मिश्रित कर लें।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

व्रत की विधि

व्रत आरंभ करने से पहले अपना उद्देश्य निर्धारित करें। उसके बाद व्रतों की संख्या 11, 21 या अधिक का अपनी सामर्थ्यानुसार मानसिक संकल्प लें तथा व्रत के बाद उद्यापन के समय वितरित की जाने वाली पुस्तकों की संख्या भी निश्चित कर लें। शुक्ल पक्ष के शुक्रवार से व्रत का प्रारंभ करें। किसी की निन्दा, चुगली या बुराई न करें, क्रोध तथा हिंसा को भी त्याग दें। प्रातःकाल स्नान करके साफ व धुले वस्त्र पहनें। सफेद या क्रीम रंग के वस्त्र लाभदायक रहेंगे। काले या नीले वस्त्रों का प्रयोग उस दिन न करें। अपने पूजा स्थान में या अन्य उपयुक्त स्थान पर आसन बिछाकर 'जय मां वैभव लक्ष्मी' का उच्चारण करें। सामने चौकी पर लाल कपड़ा बिछाकर रोली से स्वास्तिक बनाकर उस पर चावल का ढेर बनायें। उस पर कलश स्थापित करें। कलश पर कटोरी रखें तथा कटोरी में चांदी या सोने का आभूषण रख दें। आभूषण न हो तो धन का सिक्का ही रख दें। साथ ही श्री यंत्र तथा महालक्ष्मी जी का चित्र भी चौकी पर रख दें। धूप दीप आदि यथा समय प्रज्वलित करें। बार-बार 'जय मां वैभव लक्ष्मी' 'कृपा करो मां वैभव लक्ष्मी' का उच्चारण करते रहें। पूजा की तैयारी पूरी होने पर व्रत की कथा आरम्भ करें। सारा दिन निराहार रहें। सायंकाल के समय पूजा

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

करें तथा उसके पश्चात् दूध व फलाहार लें। मीठा प्रसाद भी ग्रहण कर सकते हैं। आवश्यकता पड़ने पर दिन के समय भी दूध व फलाहार ले सकते हैं। नमक का प्रयोग न करें।

उद्यापन की विधि

व्रत सम्पन्न तभी होता है जब उसका उद्यापन हो। आपने जितने शुक्रवार व्रत करने का संकल्प किया है, सारे व्रत सम्पन्न होने के पश्चात् आगामी शुक्रवार को व्रत का उद्यापन करें। उद्यापन करने के लिए व्रत की पूरी विधि का पालन करें। घर में खीर व हलुआ पूरी का भोजन बनायें। उद्यापन वाले दिन सात कन्याओं को घर में आमंत्रित करें। उनके पैर धोकर, उनकी पूजा करें। उन्हें तिलक करें, कलावा बांधे। खीर तथा हलुआ पूरी का भोजन करायें। उन्हें दक्षिणा दें तथा आशीर्वाद प्राप्त करें। सायंकाल को भोजन करें तथा पुस्तकें मन्दिर में वितरित करें। श्रद्धानुसार भगवान को दक्षिणा अर्पित करें। मनोकामना पूरी करने का निवेदन करें।

पूजा आरम्भ करने की विधि

स्नानादि से निवृत होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करके सभी पूजा सामग्री एक स्थान पर एकत्र कर लें। घर अथवा मन्दिर में शान्त स्थान का चयन करें। शुद्ध व

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

स्वच्छ आसन का प्रयोग करें। पूजा में ईशान कोण की ओर मुंह करके बैठना श्रेष्ठ होता है। उत्तर अथवा पूर्व की ओर भी मुंह कर सकते हैं। दक्षिण की ओर अपना मुख कदापि न रखें। पूजा क्रम में सर्वप्रथम गणपति जी की पूजा करें। गणपति और लक्ष्मी जी का चित्र सामने लगाएं। उनका मुख आपकी ओर होना चाहिए। गणपति जी की मूर्ति अथवा चित्र स्थापित करने से पहले वहां स्वास्तिक बनायें तथा उस पर चावल या पुष्प चढ़ायें। चित्र या मूर्ति स्थापित करने के पश्चात् उन्हें श्रद्धापूर्वक प्रणाम करें। इसके पश्चात् अपनी मानसिक व शारीरिक शुद्धि करें। दाएं हाथ से अपने शरीर पर जल छिड़कें तथा इस मंत्र का उच्चारण करें– **'ॐ अपवित्रोः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स बाह्यभ्यन्तरः शुचिः।'** अब तीन बार आचमनी से जल लेकर यह मंत्र बोलते हुए जल पी लें। **'ॐ केशवाय नमः, ॐ माधवाय नमः ॐ नारायणाय नमः।'** आसन शुद्धि की भावना से धरती माता को स्पर्श करें। **'ॐ पृथ्वित्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृताः। ॐ त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।'** अब हाथ धो लें। हाथ में थोड़ा जल तथा पुष्प लेकर यह संकल्प करें–

ॐ विष्णु र्विष्णु र्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरूषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्ततानस्य, अद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्री भवेतवाराहकल्पे, वैवस्वत मन्वन्तरे

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

भूर्लोके, भरतखण्डे, आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते, मासानां मासोत्तमेमासे (अमुक) मासे (अमुक) पक्षे (अमुक) तिथौ शुक्रवासरे (अपने गोत्र का उच्चारण करें) गोत्रोत्पन्नः (अपने नाम का उच्चारण करें) नामाः (शर्मा / वर्मा) अहं (सपरिवार / सपत्नीक) सत्प्रवृत्तिसंवर्धनाय, लोककल्याणाय आत्मकल्याणय, भविष्योज्जवल कामनापूर्तये श्रुति–स्मृति–पुराणोक्त– फलाप्राप्त्यर्थं दीर्घायुरारोग्य–पुत्र–पौत्र–धन– धान्यादिसमृध्यर्थे वांछित मनोकामना प्राप्त्यार्थे श्री मां वैभव लक्ष्मी व्रत करिष्ये / करिष्यामि।

धूप दीप जलाएं। दीपक में शुद्ध घी का प्रयोग करें। वैभव लक्ष्मी व्रत का पूरा तथा शीघ्र लाभ प्राप्त करने के लिए श्री यंत्र के सामने पहले **'ॐ श्रीं नमः'** मंत्र का 108 बार जप करें। उसके पश्चात् वैभव लक्ष्मी व्रत कथा पढ़ें। फिर महालक्ष्मी अष्टकम का पाठ करें तथा उसके बाद श्री सूक्त का पाठ करें। श्री लक्ष्मी जी की आरती का सस्वर पूरी श्रद्धा के साथ पाठ करें। वैभव लक्ष्मी व्रत के चमत्कारों का विवरण भी पढ़ें क्योंकि इससे व्रत के प्रति श्रद्धा और विश्वास की प्रबल भावना जागृत होती है। व्रत का पूरा लाभ प्राप्त करने के लिए विश्वास और श्रद्धा की अत्यन्त आवश्यकता होती है। सारी तैयारी पूर्ण होने पर व्रत की कथा आरम्भ करें।

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

वैभव लक्ष्मी व्रत कथा

बात बहुत पुरानी है। एक बड़े नगर में सतवंती नाम की स्त्री रहती थी। उसके पति का नाम धनीराम था। उनका एक सुन्दर तथा सुयोग्य पुत्र था। धनीराम अपना व्यवसाय करता था। उसका काम अच्छा चलता था तथा गृहस्थी भी सुखी थी। वे प्रत्येक शुक्रवार को महालक्ष्मी का पूजन करते थे। वे मिलकर महालक्ष्मी के मन्दिर में प्रत्येक शुक्रवार को सुन्दर हार, नारियल, धूप तथा प्रसाद आदि चढ़ाते थे। सतवंती मन्दिर में बैठकर महालक्ष्मी का जाप करती थी तथा आरती के पश्चात ही घर जाती थी। प्रत्येक शुक्रवार को मन्दिर में कीर्तन होता था जिसमें सतवंती बढ़ चढ़ कर भाग लेती थी। मां लक्ष्मी के भजन गाने में वह निपुण थी। जब वह भजन गाती थी तो सभी श्रद्धालु उसके आसपास बड़े श्रद्धा भाव से जमा हो जाते थे। सब लोग उसकी सुन्दर आवाज तथा मां के प्रति निरन्तर श्रद्धा की प्रशंसा किया करते थे। वैसे तो वह प्रतिदिन मन्दिर जाती थी परन्तु शुक्रवार का दिन तो विशेष होता था। इस प्रकार काफी समय बीत गया। वैसे भी अच्छा समय बीतते हुए पता ही नहीं चलता। धनीराम अपनी आधी आयु को पार कर चुका था। पुत्र भी जवान हो चुका था। इधर व्यवसाय में इतनी वृद्धि हो गई थी कि

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

धनीराम को मन्दिर आने का वक्त ही नहीं मिलता था। धनीराम से अब वह सेठ धनीराम बन चुका था। उसकी विलासिता में काफी वृद्धि हो गई थी। उसके मित्र व संगी साथी बदल चुके थे। जैसी संगत वैसी रंगत वाली कहावत सत्य सिद्ध हो रही थी। सेठ धनी राम की संगति विलासी तथा आवारा किस्म के व्यक्तियों के साथ अधिक हो गई। वह दिन रात शराब तथा अन्य प्रकार से विलासिता में डूबा रहता। न घर में समय पर जाता और न ही घर में खाना खाता। जुआ खेलना, मदिरा पान करना तथा दुष्कर्मों में ही लगे रहना उसकी आदत बन गई थी। जवान बेटा यह सब देखकर बहुत परेशान था। पिता गलत संगति में पड़ गया, यह देखकर वह घर में पिता के साथ निरन्तर क्लेश करने लगा। सतवंती भी इससे दुखी रहने लगी। घर में नित्य प्रति क्लेश होने लगा। कहा जाता है कि जिस घर में क्लेश होता है, वहां लक्ष्मी नहीं रुकती। धन को अच्छे कार्यों में लगाने से धन बढ़ता है और बुरे कार्यों में लगाने से धन खत्म होता है। सतवंती के घर पर भी यही हुआ। सेठ धनी राम बुरी संगति के कारण बुरी आदतों का शिकार हो गया था। सारा दिन जुआ खेलने व शराब पीने में बीत जाता। काम देखने की सुध–बुध उसे रही नहीं। नौकर–चाकर यह सब पहले से ही देख रहे थे। धीरे–धीरे बचा खुचा धन उन्होंने समेट

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

लिया और बाद में तनखाह न मिलने से वे काम छोड़कर चले गए। सेठ धनी राम ने कर्ज लेना शुरु कर दिया। कर्ज देने वाले ब्याज मांगने लगे। धनी राम का कारोबार चौपट हो चुका था। उसके पास न तो ब्याज देने के पैसे थे और न ही धन वापिस लौटाने के लिए कुछ बचा था। धन देने वालों ने उसके बचे खुचे कारोबार पर कब्जा कर लिया। धनी राम इस सबका कारण समझता था परन्तु ऐय्यासी की जिन्दगी की आदत पड़ जाने के कारण सुधरने और काम संभालने के लिए तैयार नहीं होता था। अपनी कमजोरियों को छिपाने के लिए वह घर में बहुत क्लेश करने लगा। वह स्वयं तो मन्दिर में जाना पहले ही छोड़ चुका था, अब सतवंती का भी मन्दिर जाना छूट गया था। वह सारा दिन परेशान होकर अपने बुरे दिनों की चिन्ता करती रहती। पुत्र भी अपने मां बाप की परेशानी के कारण निरन्तर परेशान था। एक दिन जब धनी राम घुड़दौड़ में अपना बचा खुचा सारा धन हार कर घर लौटा तो उसने बहुत क्लेश किया। सतवंती को गुस्से में मारा पीटा और मदिरा के नशे में घर में एक ओर लुढ़क कर सो गया। सतवंती पहले तो बहुत रोती रही फिर घर से निकलकर चल पड़ी। उसके पांव अनजाने में ही मन्दिर की ओर मुड़ गए। वहां मन्दिर की सीढ़ियों में पहुंचकर वह गिर पड़ी। उसे गिरे हुए देखकर मन्दिर के बाहर फूल

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

बेचने वाली बाई ने उसे उठाया और पानी पिलाया। इतने में वहां भीड़ जमा हो गई। मन्दिर में आने वाले अधिकांश लोग सतवंती को पहचानते थे। वे सब आपस में बात करने लगे– यह तो सतवंती है। बहुत दिन से मन्दिर नहीं आ रही थी। इसे क्या हो गया है– सब लोग तरह–तरह से बात करने लगे। इतने में मन्दिर के बड़े पुजारी आ गए। वे सतवंती को मन्दिर के अन्दर ले गए। नारियल तोड़कर उन्होंने सतवंती को प्रसाद खिलाया और जल पिलाया। सतवंती ने उन्हें सारी आपबीती सुनाई। पुजारी ने कहा कि बेटी, मैंने तेरे बारे में काफी कुछ सुना है। तेरे पति ने शराब व जुए आदि में सारा धन नाश कर दिया है। तू यह सब बरदाश्त नहीं कर सकती। इसीलिए इतनी दुखी व परेशान है। तेरे पति भी अच्छे आदमी हैं। उनके संस्कार अच्छे थे परन्तु संगति खराब होने के कारण सब कुछ बिगड़ गया है। वे अब भी सुधर सकते हैं। तुमने जो खोया है, वह सब कुछ वापिस पा सकते हो। इसके लिए तू मां वैभव लक्ष्मी का व्रत रख। यह व्रत मनोकामनापूर्ण करने वाला है। इस व्रत के फल से मैंने चमत्कार होते हुए देखे हैं। तेरा भी अवश्य ही कल्याण होगा। व्रत की विधि भी बहुत आसान है। उसे ठीक से समझ लेना होगा। यह व्रत प्रत्येक शुक्रवार को किया जाता है। शुक्ल पक्ष में जो शुक्रवार आए उस दिन से व्रत को आरम्भ करना। मन में

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

यह संकल्प करना कि तूने 11 या 21 शुक्रवार को व्रत करने हैं। व्रत पूरा होने पर व्रत की 11, 21, 31, 51, 101 या 201 पुस्तकें बांटनी हैं। जितनी अधिक व्रत में श्रद्धा होगी, उतना ही अधिक व्रत का फल मिलेगा। यह सब निश्चय करने के बाद जिस शुक्रवार को व्रत आरंभ करना है, उस दिन प्रातःकाल उठकर स्नान आदि के बाद साफ व धुले हुए वस्त्र धारण करना। किसी की निन्दा या चुगली न करना, झूठ नहीं बोलना, क्रोध नहीं करना। अपनी मानसिक स्थिति स्थिर रखना। सारा दिन 'जय मां वैभव लक्ष्मी' 'जय मां वैभव लक्ष्मी' का उच्चारण करते रहना। कहीं भी सत्संग हो रहा हो, उसे सुनना। धार्मिक पुस्तकें पढ़ना। अपने विचार अच्छे बनाये रखना। सायंकाल के समय व्रत की कथा पढ़ना। इसके लिए सायंकाल को अपने घर में एकांत स्थान पर लाल आसन बिछाकर पूर्व दिशा की ओर मुंह करके बैठ जाना। अपने सामने एक पटरा या चौकी रखना। उस पर लाल वस्त्र बिछाकर चावल का ढेर बनाना। चावल के ढेर पर तांबे का छोटा कलश रखना। कलश में जल होना चाहिए। कलश पर कटोरी रखना। कटोरी में सोने या चांदी का साफ या नया आभूषण रखना। आभूषण न हो तो गिन्नी या रुपया रखना। एक रुपये का सिक्का भी रख सकते हैं। कलश के साथ ही श्री यंत्र रखना। श्री यंत्र स्फटिक, पारद,

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

चांदी या तांबे का होना चाहिए। अगर न हो तो कागज पर बना श्री यंत्र ही रखना। इस पर अक्षत व गुलाब के फूल चढ़ाना। धूप अगरबती व दीपक इसके सामने प्रज्वलित करना। कटोरी में सोने या चांदी के रखे हुए गहने अथवा सिक्के पर हल्दी का पांच बार टीका करना तथा हर बार 'जय मां वैभव लक्ष्मी' 'जय मां वैभव लक्ष्मी' का उच्चारण करते रहना। उसके बाद महालक्ष्मी की आरती करना। महालक्ष्मी अष्टकम तथा श्री सूक्त भी पढ़ना। फिर प्रसाद का भोग अर्पित करना। आटे और चीनी को भूनकर घी मिला हुआ प्रसाद चढ़ाना तथा उस पर केले के टुकड़े काटकर भी चढ़ाना। आटे का प्रसाद न बना सको तो मिठाई का प्रसाद चढ़ाना। भोग लगाने के बाद प्रसाद सारे घर में बांटना। प्रसाद के तीन भाग करना। एक भाग परिवार में बांटना, एक भाग पक्षियों को डालना तथा एक भाग स्वयं ग्रहण करना। सूर्य अस्त होने पर भोजन ग्रहण करना। भोजन में पहले प्रसाद ग्रहण करना तथा इसके बाद मीठा भोजन करना। जो चावल कलश के नीचे रखे थे, उन्हें पक्षियों को डाल देना। कलश में भरा हुआ जल तुलसी के पौधे में डालना। इस प्रकार हर शुक्रवार को व्रत करना। यदि बीच में स्वास्थ्य खराब हो जाए तो अगले शुक्रवार को व्रत जारी रखना। व्रत के पूरा होने पर व्रत का उद्यापन करना। उद्यापन में सात कन्याओं का पूजन

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

करना। उनके पैर धोकर उनका पूजन करना तथा उन्हें भोजन करवाकर यथाशक्ति दक्षिणा देना। इसके बाद किसी भी मन्दिर या सत्संग में इस पुस्तक की 11, 21, 31, 51, 101 या 201 प्रतियां वितरित करना। अगर एक दिन में सारी पुस्तकें वितरित न हो सकें तो अगले दिन या उससे अगले दिन ये पुस्तकें अवश्य बांटना। जितनी अधिक तथा जितनी जल्दी ये पुस्तकें बटेंगी, उतना ही जल्दी आपको व्रत का फल मिलने लगेगा। व्रत का फल कई बार व्रत आरंभ करते ही मिल जाता है तथा कई बार कुछ बाद में मिलता है। अगर एक बार में व्रत का फल न मिले या मनोकामना पूरी न हो तो दुबारा इस व्रत को विधिपूर्वक करना। मां अपने भक्तों की मनोकामना अवश्य पूरी करती हैं, इसमें सन्देह नहीं रखना।

पुजारी जी से ये सारी बातें सुनकर सतवंती को बहुत खुशी हुई। उसे लगा मानो अब उसके दुखों का अन्त होने वाला है। मां के चरणों में उसकी श्रद्धा बहुत बढ़ गई। उसे पूरा विश्वास हो गया कि उसकी गृहस्थी अब पहले की तरह ही सुखपूर्वक चलने लगेगी। फिर भी सतवंती ने अपनी एक शंका का समाधान करने के लिए पुजारी जी से पूछा– 'क्या व्रत केवल मुझे ही रखना है या मेरे साथ मेरे पति को भी रखना पड़ेगा? और क्या कोई पुरुष भी इस व्रत को कर सकता है?' पुजारी जी ने कहा– 'कोई भी पुरुष या स्त्री इस व्रत को कर सकता है। यह व्रत

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

सरल व उपयोगी पुस्तकें

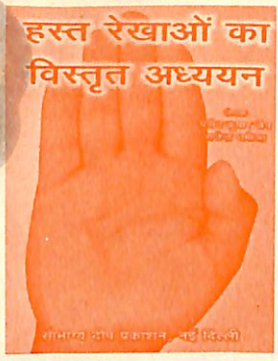

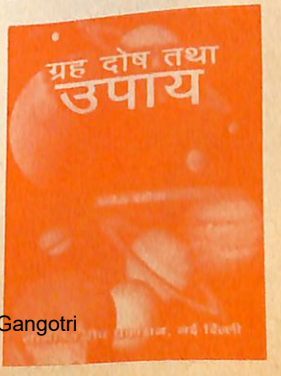

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

श्री वैभव लक्ष्मी मां

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitized by eGangotri

हे मां वैभव लक्ष्मी ! हमारी मनोकामनाएं शीघ्र पूर्ण करें और सबका कल्याण करें - यही हमारी प्रार्थना है।

सुख व समृद्धि प्रदायक श्रीयंत्र

मां वैभव लक्ष्मी को प्रसन्न करने वाला, धन-धान्य, समृद्धि, सभी ऐश्वर्य और वैभव प्रदान करने वाला सर्वसिद्धिदायक श्रीयंत्र

मनोकामना प्रदायक श्री वैभव लक्ष्मी व्रतकथा को आरंभ करने से पहले श्री यंत्र को श्रद्धा भाव से नमस्कार करें।

CC-0 Pulivarna Collection. Digitized by eGangotri

सरल व उपयोगी पुस्तकें

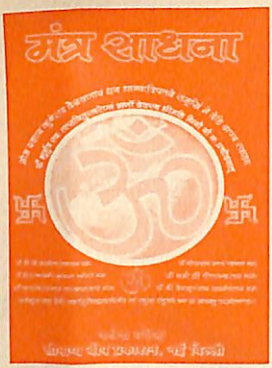

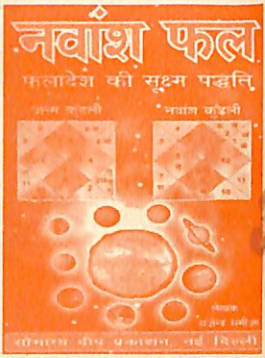

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला होता है। इसलिए जो भी व्यक्ति अपनी उन्नति चाहता है, मान प्रतिष्ठा, आर्थिक समृद्धि तथा परिवार में खुशहाली चाहता है, उसे यह व्रत करना चाहिए। यह जरूरी नहीं कि घर में पति और पत्नी दोनों इस व्रत को एक साथ रखें। केवल पति या केवल पत्नी द्वारा इस व्रत को किया जा सकता है। यदि दोनों एक साथ करें तो बहुत ही अच्छा तथा शीघ्र फल मिलता है। व्रत में श्रद्धा व पूरी आस्था अवश्य होनी चाहिए।'

सारी बात समझकर सतवंती बहुत प्रसन्न हुई और पुजारी जी के चरण छूकर खुशी–खुशी घर की ओर चल दी। दो दिन बाद ही शुक्रवार था। ग्यारह व्रत पूरे करने का संकल्प वह मन्दिर में ही ले चुकी थी। अब सोचने विचारने के लिए कुछ नहीं था। श्रद्धापूर्वक व्रत पूरे करने थे। शुक्रवार को वह प्रातःकाल उठी तथा संकल्प लेकर उसने विधिपूर्वक व्रत पूरा किया। दो शुक्रवार को व्रत करने पर ही उसके घर के वातावरण में सुधार दिखाई देने लगा। रुपया वापस मांगने वाले कर्जदारों द्वारा बार–बार अपमानित होने पर धनी राम की बुद्धि कुछ ठीक होने लगी। उसने अपने भविष्य के बारे में सोचना आरम्भ किया। तीसरा शुक्रवार आते–आते धनीराम में काफी बदलाव आ चुका था। वह कुछ सोचते–सोचते उस दिन जल्दी घर आ गया। घर आकर उसने देखा कि उसकी पत्नी व्रत की कथा पढ़ रही है। व्रत की कथा पढ़ने पर

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

पत्नी आंख बन्द किये हुए बोल रही है– 'जय मां वैभव लक्ष्मी, जय मां वैभव लक्ष्मी, मेरे घर का वातावरण ठीक करो मां। मेरा पति गलत रास्ते पर चल रहा है। बेटा घर में उदास बैठा है। मेरे घर की सारी खुशियां रूठ गई हैं। मेरे घर को संभालो मां। मेरे घर का वातावरण ठीक करो मां। हे कृपालु मां, हे दयालु मां, मेरे घर को फिर खुशियों से भर दो मां।' सतवंती मां से बार–बार यह निवेदन कर रही थी। धनी राम पीछे खड़ा सब कुछ सुन रहा था। लक्ष्मी मां की कृपा से उसी दिन उसमें सद्‌बुद्धि आ गई। उसने अपनी पत्नी की पीठ पर हाथ रखा और कहा कि आज से मैं भी तुम्हारे साथ व्रत करूंगा। व्रत की सारी विधि तुम मुझे बताओ। मां लक्ष्मी मुझसे रूठ गई थी। अब मुझे लगता है कि वह फिर मुझसे प्रसन्न हो रही हैं। पिछले सप्ताह से मेरा काम कुछ ठीक हो रहा है। मैं भी हर शुक्रवार महालक्ष्मी जी के दर्शन अवश्य करूंगा। इतने में उसका बेटा भी आ गया। वह मन्दिर में दर्शन करने गया था। धनी राम ने अपने बेटे को गले लगा लिया और कहा कि मुझसे बहुत बड़ा अपराध हो गया है। मैं मां लक्ष्मी की कृपा को भूल गया था। मैंने तुम लोगों को बहुत दुख दिया है। इसके कारण मैंने खुद भी खूब दुख पाया है। मैं अब सब गलत रास्तों को छोड़ दूंगा। शराब व बुरी संगति को भी छोड़ दूंगा। ये सब नरक में धकेलने के रास्ते हैं। हम हर शुक्रवार मां लक्ष्मी के मन्दिर में

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

अवश्य जाएंगे। हर शुक्रवार अब हम मिलकर मां वैभव लक्ष्मी के व्रत करेंगे।' ऐसा कहते ही सारे घर में प्रसन्नता का वातावरण छा गया। धनी राम ने अपने व्यवसाय में पूरा ध्यान देना शुरु कर दिया। उसका पुत्र भी उसके साथ कार्य करने लगा। सारा कर्ज उतर गया। समाज में धनी राम का सम्मान फिर से बढ़ गया। उसके पुत्र ने उच्च शिक्षा प्राप्त की। परिवार में खुशियां फिर से लौट आई। सभी रात्रि में मिलकर एक साथ भोजन करते और अपने व्यवसाय में वृद्धि तथा सामाजिक कार्यों की चर्चा करते। हर शुक्रवार को बिना रोक महालक्ष्मी के मन्दिर में जरूर जाते। घर में नौकर चाकरों की भरमार फिर से हो गई। दान दक्षिणा देने तथा सद्कार्यों में उनका काफी समय व्यतीत होने लगा। धनी राम के परिवार को मां वैभव लक्ष्मी के व्रत के फलस्वरूप जो समृद्धि तथा सुख साधन प्राप्त हुए उनकी चर्चा दूर–दूर होने लगी। इस प्रकार वैभव लक्ष्मी का व्रत करके मां वैभव लक्ष्मी की कृपा प्राप्त करने वाले भक्तों की संख्या में निरन्तर वृद्धि होती रही। आज भी मां वैभव लक्ष्मी अपने सभी भक्तों की झोली भरती हैं। उनकी मनोकामना पूरी करती हैं। मां वैभव लक्ष्मी पर सबकी आस्था दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। जैसे मां वैभव लक्ष्मी ने धनी राम तथा सतवंती को सब कुछ दिया, उसी प्रकार अपने सब भक्तों की मनोकामनाएं पूरी करे। जय मां वैभव लक्ष्मी। जय मां वैभव लक्ष्मी।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

इन्द्रकृतं महालक्ष्म्यष्टकम्

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शंख चक्र गदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते गरूड़ारूढ़े कोलासुरभयंकरि।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।
सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्ट भयंकरि।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।
सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्ति प्रदायिनी।
मंत्रपूते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।
आद्यान्तरहिते देवि आद्यशक्ति महेश्वरि।
योगजे योग सम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।
स्थूलसूक्ष्म महारौद्रे महाशक्ति महोदरे।
महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।
पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।
श्वेताम्बरधरे देवि नानालंकारभूषिते।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महा लक्ष्मि नमोस्तुते।।
महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिमान्नरः।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा।।
एककाले पठेन्नित्यं महापापविनाशनम्।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः।।
त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम्।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा।।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

इस प्रकार माता महालक्ष्मी का अर्चन वन्दन करने पर वह जरूर अपने भक्तों पर प्रसन्न होकर उनकी खाली झोली धन–धान्य और खुशियों से भर देती है।

श्री यंत्र

भारतीय यंत्र साधना में श्री यंत्र की उपासना का विशेष महत्व है। लक्ष्मी, सरस्वती, ब्रह्माणी तीनों लोकों की सम्पति एवं शोभा का नाम श्री है। अनन्त ऐश्वर्य और स्थायी लक्ष्मी प्राप्ति के लिए श्री यंत्र का महत्व सर्वाधिक है। पौराणिक ग्रन्थों में अनेक स्थानों पर यह उल्लेख मिलता है कि देवता, यक्ष, दानव और मानव आदि सभी लोग यंत्रों और तंत्रों का प्रयोग करते रहते थे। भगवान ब्रह्मा ने मानव कल्याण के लिए अनेक सार्थक यंत्रों की खोज की और इनकी प्रतिष्ठा आज भी भारत के समस्त पौराणिक स्थलों पर होती है। श्री यंत्र को ऐसे सभी यंत्रों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। दीपावली, धनतेरस, बसन्त पंचमी, रवि पुष्य अथवा गुरू पुष्य योग में इसकी सिद्धि विशेष फलदायक मानी गयी है।

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

श्री यंत्र का सीधा मतलब है लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए विशेष उपाय। विधिवत् प्राण प्रतिष्ठा किए हुए और प्रतिदिन पूजित श्री यंत्र के दर्शन का फल महान है। इसके पूजन से अनेक चमत्कारिक सिद्धियां प्राप्त होती हैं, सभी प्रकार के दुःख, रोग और दरिद्रता का नाश होता है तथा समस्त भौतिक आनन्द, सुख, शान्ति, आरोग्य प्राप्त होता है तथा सभी कामों में सफलता प्राप्त होती है। इसे पूजा स्थान अथवा व्यापारिक स्थान पर रखने से विशेष लाभ होता है। यह भगवती त्रिपुर सुन्दरी का यंत्र है। इस यंत्र में समस्त ब्रह्मांड की उत्पति तथा विकास क्रम दिखाए गए हैं। यह यंत्र मुख्यतः 9 भागों में बंटा हुआ है। ये हैं 1. बिन्दु, 2. त्रिकोण (ये तीन हैं), 3. वसुकोण (ये 8 हैं तथा इनकी अधिष्ठात्री देवियां वशिनी, कामेश्वरी, मोहिनी, विमला, अरूणा, जमिनी, सर्वेश्वर तथा कौलिनी हैं। यह 9 वाग्देवियां कहलाती हैं जो क्रमशः भीत, उष्ण, सुख, दुःख, इच्छा, सत्व, रज तथा तप की स्वामिनी हैं।) 4. त्रिकोणः (ये 10 हैं), 5. त्रिकोण (ये भी 10 हैं), 6. चक्र (इसमें 14 त्रिकोण हैं), 7 अष्टदल कमल, 8, षोड़श दल तथा 9, भुपूर। इस प्रकार इस यंत्र में कुल 43 त्रिकोण बनते हैं। अगर बीच का त्रिकोण अधोमुखी है तो वह श्री यंत्र भाक्ति प्रधान होता है तथा यदि वह त्रिकोण उर्ध्वमुखी है तो यंत्र शिव प्रधान होता है।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

इस यंत्र की महिमा का वर्णन अनेक स्थानों पर मिलता है। विश्व प्रसिद्ध सोमनाथ मन्दिर के भूगर्भ में स्वर्ण शिलाओं पर श्री यंत्र उत्कीर्ण थे। इन यंत्रों की पूजा ब्राह्मणों द्वारा नित्य की जाती है। वहां धन सम्पति की अपार वर्षा होती है। इसी से आकृष्ट होकर महमूद गजनवी इस मन्दिर को लूट कर ले गया था तथा स्वर्ण के लालच में उसने इन श्री यंत्रों को तोड़ दिया था। वहां की सम्पति के बारे में सुनने को मिलता है कि अरबों रूपये के रत्न तो मन्दिर के खम्भों पर ही जड़े हुए थे। तिरूपति बाला जी मन्दिर के मुख्य विग्रह के पीठ में श्री यंत्र उत्कीर्ण हैं तथा इनका अभी भी प्रतिदिन विधि–विधान से पूजन होता है। इस मन्दिर की मासिक आय करोड़ों रूपये में है तथा भक्तजनों की हमेशा लाइनें लगी रहती हैं। श्री यंत्र को लेते समय एक महत्वपूर्ण सावधानी बरतने की आवश्यकता है। आजकल बाजार में अधिकतर जो श्री यंत्र उपलब्ध हैं उनमें केवल श्री चक्र ही होता है तथा बीज व शक्ति मंत्र नहीं होते। बीजाक्षर और शक्तिमंत्र यंत्र की आत्मा और प्राण हैं। इनके बिना यह अधूरा ही माना जाना चाहिए। अतः पूर्ण लाभ हेतु सम्पूर्ण श्री यंत्र का ही पूजन किया जाना चाहिए। श्री यंत्र स्फटिक,

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

पारद, सोने, चांदी तथा तांबे पर बने हुए उपलब्ध होते हैं। स्फटिक श्री यंत्र को सर्वश्रेष्ठ तथा शीघ्रफलदायक माना जाता है। श्री यंत्र की पूजा के लिए मंत्र है– ओऽम् श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद–प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ओऽम् महालक्ष्मये नमः। इसके सामने श्री सूक्त का पाठ करने पर यह तुरन्त फल देता है।

श्री सूक्त

ओऽम् हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्दां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽआवह।। 1।।
तां मऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरूशानहम्।। 2 ।।
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।। 3 ।।
कांसोस्मितां हिरण्यं प्रकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।। 4।।
चन्द्राप्रभासां प्रशंसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमिं भारणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वांवृणे।।5।।
आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायांतरा याश्च बाह्या अलक्ष्मी।। 6 ।।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च कीर्ति मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे।।7।।
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात्।। 8 ।।
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां ताहिहोपह्वये श्रियम्।। 9।।
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।10 ।।
कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं बासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।11 ।।
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।12 ।।
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मी जातवेदो मऽआवह।।13 ।।
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यांहिरण्मयीं, लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।14।।
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विदेयं पुरूषानहम्।।15।।
यः शुचि प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।। 16 ।।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

(श्री सूक्त का हिन्दी में भावार्थ)

1. हे जातवेद रूपी अग्निदेव! आप भूतकालिक सभी वृत्तान्तों को जानने वाले तथा बताने वाले हैं, आपसे कुछ भी छुपा नहीं है। आप सुवर्ण सदृश पीतवर्ण वाली तथा कुछ हरित वर्ण वाली तथा हरिणी रूप धारिणी स्वर्ण मिश्रित रजत की माला धारण करने वाली और चन्द्रमा के समान श्वेत पुष्प माला धारण करने वाली और चन्द्रमा के समान प्रकाशमान तथा चन्द्रमा के समान विश्व को प्रसन्न करने वाली अति चञ्चला हिरण्य समान रूपवाली या हिरण्यमयी ही जिसकी देह है, ऐसे सर्वगुण सम्पन्न श्री अर्थात् लक्ष्मी को मेरे लिए बुलायें।
2. हे जातवेद रूपी अग्निदेव! आप इस संसार में विख्यात विष्णु–पत्नी लक्ष्मी जी को मेरे पास बुलाइए जिसके आवाहन करने पर मैं सुवर्ण, गौ, अश्व और पुत्र–पौत्रादि को प्राप्त कर सकूं।
3. जिस देवी के आगे घोड़े व मध्य में रथ हैं अथवा जिसके सम्मुख घोड़े रथ में जुते हुए हैं ऐसे रथ में बैठी हुई, हस्तियों के गौरव से संसार को हर्षित करने वाली, प्रफुल्लित करने वाली, दैदीप्यमान एवं जन–जन

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

की समस्त जनों के आश्रय देने वाली श्री को मैं अपने सम्मुख बुलाता हूं। सबकी आश्रयदाता वह लक्ष्मी मेरे घर में सदैव निवास करें।

4. जिसका स्वरूप वाणी और मन का विषय न होने के कारण अवर्णनीय है तथा जो मन्द हास्य युक्ता है, जो चारों ओर सुवर्ण से ओत–प्रोत है एवं दया से आर्द्र हृदय वाली या समुद्र से उत्पन्न होने के कारण आर्द्र शरीर होते हुए भी दैदीप्यमान है, स्वयं पूर्ण काम होने के कारण भक्तों के नाना प्रकार के मनोरथों को पूर्ण करने वाली, कमल के ऊपर विराजमान, कमल सदृश ग्रह में निवास करने वाली, संसार प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने पास बुलाता हूं।

5. चन्द्रमा के समान प्रकाशवाली, अपनी कीर्ति से दैदीप्यमान, स्वर्ग लोक में इन्द्रादि देवों से पूजित, अतिदानशीला कमल के मध्य में रहने वाली, सभी की रक्षा करने वाली एवं आश्रय देने वाली, जगत् विख्यात उन लक्ष्मी जी को मैं प्राप्त करता हूं। हे लक्ष्मी! आपकी परम कृपा से मेरी दरिद्रता नश्ट हो। अतः मैं आपका आश्रय लेता हूं।

6. सूर्य के समान कान्ति वाली, आपके तेजमयी प्रकाश

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

के बिना पुष्प के फल देने वाला एक वृक्ष–विशेष उत्पन्न हुआ। तदन्तर आपके हाथ से बिल्व का वृक्ष उत्पन्न हुआ। उस बिल्व वृक्ष के फल मेरे बाह्य और आभ्यन्तर दरिद्रों को नष्ट करें।

7. हे लक्ष्मी! देव सुख अर्थात् श्री महादेव के मित्र इन्द्र कुबेरादि देवताओं की अग्नि मुझे प्राप्त हो अर्थात् मैं अग्निदेव की उपासना करूं एवं मणि के साथ अर्थात् चिन्तामणि के साथ या कुबेर के मित्र मणिभद्र के साथ या रत्नों के साथ, कीर्ति अर्थात् दक्षकन्या कुबेर की कोशशाला मुझे प्राप्त हो।
8. भूख और प्यास रूपी मल को धारण करने वाली एवं लक्ष्मी की बड़ी बहन दरिद्रता का मैं नाश करता हूं। हे लक्ष्मी, आप मेरे घर से अनैश्वर्य तथा धन वृद्धि के प्रतिबन्धक विघ्नों को दूर करें।
9. सुगन्धित पुष्प के समर्पण करने से प्राप्त करने योग्य, किसी से भी नहीं दबने योग्य, धन–धान्य से सर्वदा पूर्ण, गौ–अश्वादि पशुओं को समृद्धि देने वाली, समस्त प्राणियों की स्वामिनी तथा संसार–प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने घर में सादर आमंत्रित हूं।
10. आपके प्रभाव से मैं मानसिक इच्छा एवं संकल्प, वाणी

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

की सहायता, सत्यता, गौ आदि पशुओं के रूप एवं अन्नों के रूप को प्राप्त करूं। सम्पत्ति और यश मुझमें आश्रय लें। अर्थात् मैं लक्ष्मीवान् एवं कीर्तिवान् बनूं।

11. 'कर्दम' नामक ऋषि से लक्ष्मी प्रकृष्ट पुत्र वाली है। हे कर्दम! तुम मुझमें भली प्रकार से वास करो। हे कर्दम! मेरे घर में लक्ष्मी निवास करें। मात्र इतनी ही प्रार्थना नहीं है अपितु कमल की माला धारण करने वाली सम्पूर्ण संसार की माता लक्ष्मी को मेरे वंश में निवास कराओ।

12. जिस प्रकार कर्दम की सन्तति 'ख्याति' से लक्ष्मी अवतरित हुई, उसी प्रकार कल्पान्तर में भी समुद्र–मंथन द्वारा चौदह रत्नों के साथ लक्ष्मी का भी आविर्भाव हुआ है। पदार्थों में सुन्दरता ही लक्ष्मी है। लक्ष्मी के आनन्द, कर्दम, चिक्लीत और श्रुति ये चार पुत्र हैं। इनमें 'चिक्लीत' से प्रार्थना की गई है कि, हे चिक्लीत नामक लक्ष्मीपुत्र! तुम मेरे घर में निवास करो। केवल तुम ही नहीं अपितु दिव्य गुणयुक्त तथा सर्वाश्रयभूता अपनी माता लक्ष्मी को भी मेरे घर में निवास कराओ।

13. हे अग्निदेव! तुम मेरे घर में भक्तों पर सदा दयार्द्रचित रहो। जिस प्रकार लकड़ी के बिना असमर्थ पुरूष चल नहीं सकता, उसी प्रकार लक्ष्मी के बिना संसार का

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

कोई काम नहीं चल सकता। सुन्दर वर्ण वाली एवं सुवर्ण की माला वाली सूर्य रूपा अर्थात् जिस प्रकार सूर्य प्रकाश और वृष्टि द्वारा जगत का पालन–पोषण करता है, उसी प्रकार लक्ष्मी ज्ञान और धन के द्वारा संसार का पालन–पोषण करती है। अतः प्रकाशस्वरूपा लक्ष्मी को बुलाओ।

14. हे अग्निदेव, स्वर्ण के समान वर्णवाली, हेम मालिनी, सोने व चांदी की माला धारण करने वाली, सारे जगत का पालन पोषण करने वाली, ज्ञान व धन प्रदान करने वाली प्रकाश स्वरूप लक्ष्मी को बुलाओ।

15. हे अग्निदेव! तुम मेरे यहां उन जगद्विख्यात लक्ष्मी को, जो मुझे छोड़कर अन्यत्र नहीं जाने वाली हैं, बुलाओ! जिन लक्ष्मी कै निमित्त मैं सुवर्ण, उत्तम ऐश्वर्य, गौ, दासी, घोड़े और पुत्र–पौत्रादि को प्राप्त करूं, अर्थात् स्थिर लक्ष्मी को बुलाओ।

16. जो मनुष्य लक्ष्मी की प्राप्ति की कामना करता हो, वह पवित्र और सावधान होकर प्रतिदिन अग्नि में गौ–घृत का हवन और उसके साथ श्री सूक्त की पन्द्रह ऋचाओं का नित्यप्रति पाठ करें।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

श्रीलक्ष्मीजी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निसिदिन सेवत हर-विष्णु-धाता।। ॐ।।

उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता।। ॐ।।

दुर्गारूप निरञ्जनि, सुख-सम्पति-दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋधि-सिधि-धन पाता।।ॐ।।

तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता।
कर्म प्रभाव प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता।। ॐ।।

जिस घर तुम रहती, तहँ सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता।। ॐ।।

तुम बिन यज्ञ न होवे, वस्त्र न हो पाता।
खान-पान का वैभव सब तुमसे आता।। ॐ।।

शुभ - गुण - मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहिं पाता।। ॐ।।

महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई नर गाता।
उर आनन्द समाता, पार उतर जाता।। ॐ।।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

वैभव लक्ष्मी व्रत के चमत्कार

व्यक्ति को देवी देवता तथा भगवान पर तभी भरोसा होता है जब उसे कोई चमत्कार दिखाई दे। भगवान की सत्ता में उसे सच्चाई दिखे। लाभ मिले या किसी भी प्रकार से कोई चमत्कारपूर्ण कार्य सम्पन्न हो तथा व्यक्ति की मनोकामना पूर्ण हो। प्रायः जब कष्ट मिलते हैं तो व्यक्ति भगवान को याद करता है। कष्ट कैसे भी हो सकते हैं– आर्थिक, मानसिक या शारीरिक, मनुष्य उस समय भगवान से यही प्रार्थना करता है कि किसी प्रकार ये कष्ट दूर हों और मैं तेरा उपकार हमेशा मानता रहूंगा। व्रत करने की प्रतिज्ञा भी आदमी प्रायः ऐसे समय में ही करता है। बहुत ही विरले लोग ऐसे होते हैं जो सब कुछ होते हुए भी जनकल्याण की भावना से व्रत करते हैं। कोई आवश्यकता पड़ने पर व्रत करे या आवश्यकता पड़ने से पहले ही व्रत करे, फल की प्राप्ति अवश्य होती है। व्रत में नियम पालन करने की इच्छा, श्रद्धा तथा विश्वास महत्वपूर्ण घटक हैं। व्यक्ति का विश्वास तभी बढ़ता है जब उसे स्वयं फल की प्राप्ति हो, स्वयं चमत्कार दिखाई दे।

वैभव लक्ष्मी की कृपा से नौकरी प्राप्त हुई

ब्रजेश कुमार दिल्ली का निवासी है। एम. बी. ए. करने

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

के बाद वर्षों से खाली घूम रहा था। पहले किसी भी बड़ी कम्पनी में उसे नौकरी नहीं मिली। छोटी–छोटी कम्पनियों में 3, 4 हजार रुपये की नौकरियां मिलती थीं जो उसे मंजूर नहीं था। चार वर्ष तक बेरोजगार रह कर सबसे डांट खाने लगा। अब स्थिति यह बनी कि उसे तीन हजार रुपये की नौकरी देने वाला भी कोई नहीं था। धीरे–धीरे सब मित्र उससे दूर होते चले गए क्योंकि नौकरी न होने से उसके पास न तो धन था और न ही समाज में इज्जत। एक दिन उसकी मां को महालक्ष्मी मन्दिर के सामने वैभव लक्ष्मी व्रत की पुस्तक मिली। मां ने यह संकल्प किया कि मेरे पुत्र ब्रजेश को अच्छी नौकरी मिल जाए। इस उद्देश्य से उसकी मां ने अपने मन में निश्चय करके व्रत आरम्भ कर दिये। ब्रजेश कुमार उस समय निराशा के दौर से गुजर रहा था। उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता था। वह छोटी से छोटी नौकरी भी करने के लिए तैयार था परन्तु मां वैभव लक्ष्मी के व्रत का चमत्कार तो होना ही था। तीन महीने में ही उसे एक अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनी में नौकरी मिल गई। उसे अपनी उम्मीद से चार गुना तनख्वाह मिली और बार–बार देश–विदेश घूमने का अवसर मिला। ब्रजेश कुमार ने अपनी माता के साथ मिलकर मां वैभव लक्ष्मी व्रत की पुस्तकें मन्दिर में वितरित की। जय मां वैभव लक्ष्मी। जय मां वैभव लक्ष्मी।

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

विवाह शीघ्र हुआ

मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल की निवासी रीमा आयु के 30 वर्ष पार कर चुकी थी। घर में हर प्रकार से सुख समृद्धि थी। धन बहुत अधिक तो नहीं था, परन्तु इतना भी कम नहीं था कि विवाह ही न हो पाए। रंग कुछ सांवला अवश्य था परन्तु नैन नक्श तीखे थे। कहीं भी ऐसा नहीं लगता था कि उसके विवाह में परेशानी होगी। अगर रंग साफ होता तो वह राजकुमारी के समान ही लगती थी। परिवार वालों को उसके विवाह की चिन्ता खाए जा रही थी। शिक्षा पूरी हुए भी 6 वर्ष बीत चुके थे। पंडित ज्योतिषियों ने बताया कि उस पर शनि व राहु का प्रकोप है। इस कारण विवाह में विलम्ब होता ही रहेगा। अगर विवाह हो भी गया तो सुख मिलने की संभावना कम ही है। यह सब जानकर उसकी माता बहुत दुखी होती थी। कोई उपाय नजर नहीं आ रहा था। समय हाथ से निकला जा रहा था। अनेक उपाय करके थक चुकी थी परन्तु कोई लाभ प्राप्त नहीं हुआ। एक बार जब वह अपने मामा से मिलने मुम्बई आई तो वहां उसकी मामी ने उसे वैभव लक्ष्मी व्रत करने की सलाह दी। रीमा को व्रत आदि में अधिक विश्वास नहीं रह गया था क्योंकि वह अनेक उपाय पहले ही अपना चुकी थी। फिर भी उसने अपनी मामी के कहने पर वैभव लक्ष्मी व्रत करने का फैसला कर

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

लिया। वापिस आकर उसने अगले शुक्रवार से व्रत करना आरम्भ कर दिया। ग्यारह व्रत पूरे होने से पहले ही उसका रिश्ता एक सम्पन्न परिवार में निश्चित हो गया। परिवार वालों को इसी तरह की गुणवती व सुशील बहू की आवश्यकता थी। विवाह भी शीघ्र ही सम्पन्न हो गया। रीमा ने पहले अपने घर में व्रत पूरे करके उद्यापन किया तथा विवाह के बाद ससुराल जाकर पुनः व्रत आरम्भ किये। वैभव लक्ष्मी की कृपा से ससुराल पक्ष में धन धान्य की वृद्धि होने लगी और उसका सम्मान काफी बढ़ गया। यह सब मां वैभव लक्ष्मी के व्रतों का ही फल था जिससे रीमा को इतनी अच्छी ससुराल प्राप्त हुई और जीवन में निराशा के स्थान पर सभी सुख प्राप्त हुए।

बन्द व्यवसाय में प्रगति हुई

दिल्ली में बनारसी दास नामक व्यक्ति का कपड़े का बहुत अच्छा व्यापार था। उसने अपनी आय से एक भव्य मकान बना लिया था तथा काफी धन जमा भी कर लिया था। उसका व्यवसाय तेजी से चल रहा था। वह अपना व्यवसाय नकद व उधार दोनों ही प्रकार से चला रहा था। एक पार्टी को कपड़ा उधार देते–देते उसका काफी धन फस गया था। उस पार्टी का काम कपड़े की सिलाई करके विदेश में भेजना था। आमदनी अच्छी थी और वह पहले समय पर बनारसी दास को अदायगी भी कर देता था। एक बार उस पार्टी ने काफी धनराशि का कपड़ा

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

उधार लेकर बाहर भेजा। दुर्भाग्य से उसका सारा माल रिजैक्ट हो गया। माल वापिस आने में भी काफी देर लगनी थी। लाखों का माल कौड़ियों के भाव में बेचना पड़ता। ऐसे में उस पार्टी ने अपना कारोबार बन्द कर दिया और बाजार से ओझल हो गया। बनारसी दास का काफी धन उसके साथ ही डूब गया था। काफी खोजबीन करने पर भी जब उसका पता न चला तो बनारसी दास ने भी अपना कारोबार बन्द करने का निश्चय किया क्योंकि उसने अपने लेनदारों को तो धन वापिस करना ही था। परिवार में अशांति के कारण बनारसी दास की पत्नी मन्दिरों व अन्य धर्मस्थलों पर घूमती रहती थी। एक दिन उसे एक मन्दिर में एक लड़की ने वैभव लक्ष्मी व्रत कथा की पुस्तक दी। घर आकर उसने वह पुस्तक पति को दिखाई। पति पत्नी ने वह व्रत करने का निर्णय लिया। अभी दो माह ही गुजरे थे कि बनारसी दास ने जिस पार्टी को उधार दिया था, वह पार्टी फिर उसकी दुकान पर आई और काफी धन स्वयं ही लौटा गई। उसने आर्डर का सामान दूसरी जगह पर दे दिया था। इस प्रकार बनारसी दास व उसके परिवार का मां वैभव लक्ष्मी पर विश्वास बहुत अटूट हो गया। बनारसी दास ने अपने परिवार सहित मां वैभव लक्ष्मी के व्रत का उद्यापन किया और 101 पुस्तकें मन्दिर में बांटी। 'जय मां वैभव लक्ष्मी। माता वैभव लक्ष्मी सबका कल्याण करो। जय मां वैभव लक्ष्मी।'

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

क्या आपको वितरित करने के लिए पुस्तकों की आवश्यकता है? ये पुस्तकें आप हमारे किसी भी कार्यालय में स्वयं आकर अथवा लाजपत नगर कार्यालय में सम्पर्क करके वी. पी. पी. से प्राप्त कर सकते हैं। 21 अथवा अधिक पुस्तकें एक साथ मंगाने पर पैकिंग व डाकखर्च मुफ्त।

वी. पी. पी. से मंगाने पर कुल खर्च

11 पुस्तकें	= 110/– रु.	21 पुस्तकें	= 180/– रु.
31 पुस्तकें	= 250/– रु.	51 पुस्तकें	= 400/– रु.
101 पुस्तकें	= 750/– रु.	201 पुस्तकें	= 1250/– रु.

सौभाग्य दीप

सौभाग्य ज्योतिष व रत्न केन्द्र

★ 74, रिंग रोड मार्किट, सरोजनी नगर,
नई दिल्ली–23 फोनः 24671639, 24109797

★ मेन रोड, पटेल नगर, शादीपुर डिपो के सामने,
नई दिल्ली– 110008 फोनः 25708596, 25708238

★ फ्लैट नं. 45, सैन्ट्रल मार्किट, लाजपतनगर,
नई दिल्ली–24, फोनः 29840051, 29840053, 30946010

★ LG-9, साउथएक्स प्लाजा–2, साउथएक्सटैंशन पार्ट–2,
मस्जिद मोठ, नई दिल्ली–49, फोनः 26262699, 26257533

★ एस–527, स्कूल ब्लाक, शकरपुर, विकास मार्ग चौक,
दिल्ली – 110092, फोन : 55742454

★ कमरा नं.–1, पहली मंजिल, विवेकानन्द मैन्शन,
डॉ. अम्बेडकर रोड़, (शिन्देवाड़ी के सामने)
दादर (ईस्ट), मुम्बई–14 फोनः 24160034, 9324393375

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

क्या आप अपने कार्य में रुकावट से परेशान हैं?

क्या लगातार मेहनत करने पर भी आपको पूरा फल प्राप्त नहीं होता?

क्या आपके शत्रु अकारण आपको परेशान करते हैं?

क्या आपको दूसरों की गलतियों का शिकार होना पड़ता है?

क्या आप नजर दोष अथवा शत्रुओं के गुप्त प्रयोगों के कारण परेशान हैं?

यदि हां, तो आप अपने घर में बन्धन मुक्ति यंत्र लगाएं तथा इसके सामने 40 दिन सरसों के तेल का दीपक जलाएं। आपको अवश्य ही वांछित लाभ प्राप्त होगा।

कीमत केवल 1100/– रु.

आज ही हमें फोन करें या पत्र लिखें।

हमारा पता है–

सौभाग्य दीप

फ्लैट नं. 45, सैन्ट्रल मार्किट, लाजपतनगर,
नई दिल्ली–24, फोनः 29840051, 29840053, 30946010
मोबाइल : 9312413737, 9350577777, 9873209999

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

क्या आपके बच्चे की शिक्षा में रुचि नहीं है?

क्या पूरी मेहनत करने के बाद भी उसे अच्छे अंक प्राप्त नहीं हो पाते?

क्या आप चाहते हैं कि आपका बच्चा सद्‌गुणी, श्रेष्ठ व सफल व्यक्ति बने?

यदि हां, तो उसके अध्ययन कक्ष में सरस्वती महायंत्र लगाएं। बीसा पन्ना लाकेट धारण करना, सरस्वती यंत्र का लाकेट धारण करना तथा सरस्वती यंत्र पुस्तकों के साथ रखना भी लाभदायक उपाय हैं।

हमें फोन करें या पत्र लिखें। हमारा पता है–

सौभाग्य दीप

फ्लैट नं. 45, सैन्ट्रल मार्किट, लाजपतनगर,
नई दिल्ली–24, फोनः 29840051, 29840053, 30946010
मोबाइल : 9312413737, 9350577777, 9873209999

भगवान शिव की पूजा के लिए श्रेष्ठ उपाय - पारद शिवलिंग का सैट

इसमें सम्मिलित हैं :

(1) पारद शिवलिंग (2) पारद शिवलिंग का आसन
(3) रूद्राक्ष माला (4) महामृत्युंजय लाकेट
(5) महामृत्युंजय यंत्र (6) चांदी का बेलपत्र
(7) शिव स्तुति पुस्तक

कीमत केवल 1500/– रु.

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

आर्थिक समृद्धि के लिए श्री यंत्र का सैट

इसमें सम्मिलित हैं :

(1) स्फटिक श्री यंत्र (2) स्फटिक श्री यंत्र का आसन
(3) स्फटिक माला (4) श्री यंत्र रंगीन (छोटा)
(5) श्री यंत्र का ताम्र पत्र पर लाकेट

कीमत केवल 1650/– रु.

कालसर्प योग के दुश्प्रभाव से मुक्ति के लिए कालसर्प योग शांति सैट

इसमें सम्मिलित हैं :

(1) कालसर्प योग शांति महायंत्र (2) कालसर्प योग शांति लाकेट (3) रूद्राक्ष माला (4) नाग नागिन का जोड़ा (5) मोर पंखी (6) यज्ञ भस्म (7) कालसर्प योग प्रभाव व शांति पुस्तक।

अधिक जानकारी के लिए फोन करें या पत्र लिखें।

हमारा पता है–

सौभाग्य दीप

फ्लैट नं. 45, सैन्ट्रल मार्किट, लाजपतनगर,
नई दिल्ली–24, फोनः 29840051, 29840053, 30946010
मोबाइल : 9312413737, 9350577777, 9873209999

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

सौभाग्य दीप की शुद्ध व प्राण प्रतिष्ठित ज्योतिष संबंधी सामग्री

सौभाग्य माला

आकर्षण लाकेट

केमद्रुम शांति लाकेट

श्री यंत्र का लाकेट

तुलसी माला

नवरत्न लाकेट स्वास्तिक

त्रिशक्ति लाकेट

बन्धान मुक्ति यंत्र

सरस्वती महायंत्र

त्रिशक्ति लाकेट

एकमुखी श्री यंत्र

CC-0 Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

मनोकामना प्रदायक

श्री वैभव लक्ष्मी

व्रत कथा

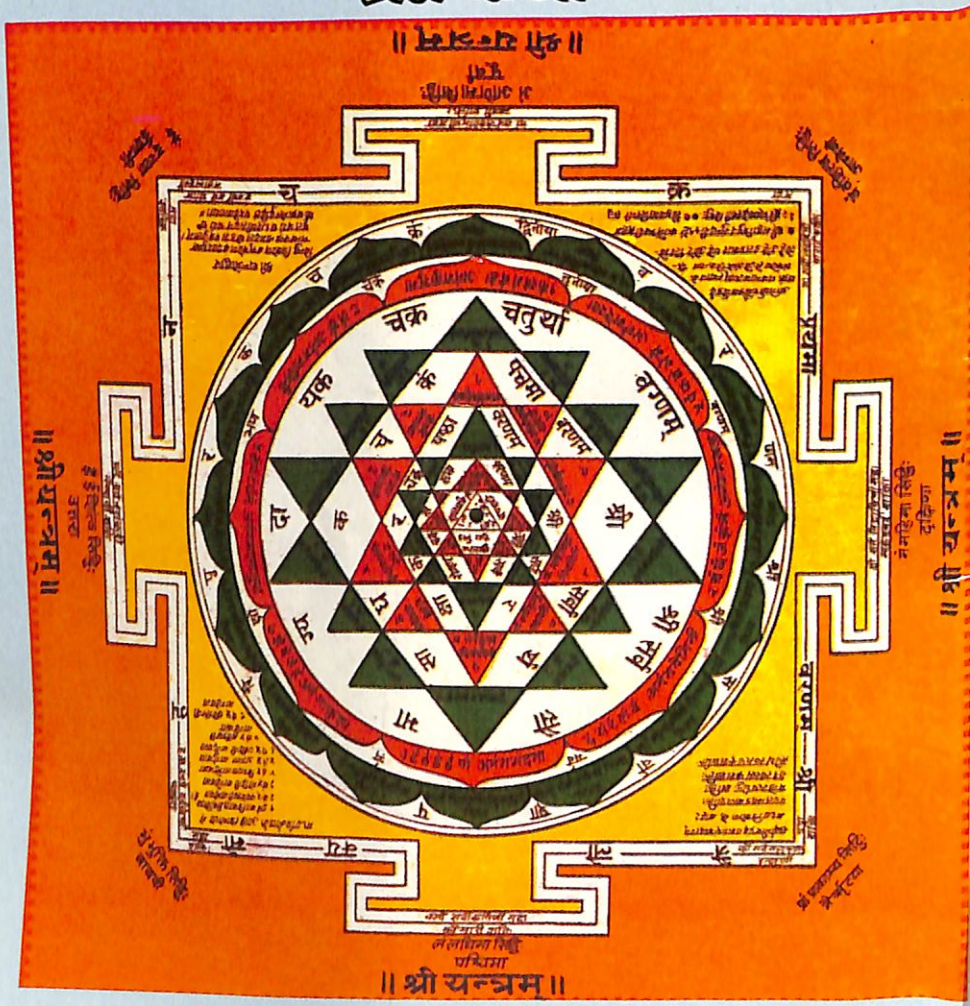

सुख, शांति तथा समृद्धि देने वाले श्री यंत्र के नित्य दर्शन करने से सभी मंगलकामनायें शीघ्र पूर्ण होती हैं।

CC-0.Pulwama Collection. Digitzed by eGangotri

सौभाग्य दीप प्रकाशन